Nature of political theory

- बकल के शब्दों में - राजनीति विज्ञान एक [illegible] है। यदि तो इसमें मात्र संस्थाओं का औपचारिक अध्ययन होता है।
- मैटलैण्ड ने भी अपनी [illegible] भाषा में कहा है कि जब मैं राजनीति विज्ञान शीर्षक के अन्तर्गत परीक्षा प्रश्नों को देखता हूँ तो मुझे प्रश्नों के प्रति नहीं वरन शीर्षक के प्रति खेद होता है।

- बकल, कॉम्टे, मैटलैण्ड आदि विद्वान राजनीति विज्ञान को विज्ञान नहीं मानते हैं क्योंकि, इसके कोई सुनिश्चित तथा क्रमबद्ध सिद्धान्त नहीं है तथा इसमें निरन्तरता का अभाव है।
- विज्ञान में शुद्ध निश्चित नियम तथा सिद्धान्त होते हैं जो सर्वमान्य तथा सार्वभौम होते हैं। राजनीति विज्ञान में ऐसा कोई नियम तथा सिद्धान्त नहीं है।
- जहां एक आदर्शवादी, राज्य की सर्वोच्च सत्ता को मान्यता देते है तो दूसरी ओर साम्यवादी तथा अराजकतावादी इसको अमान्य करते हैं।
- विज्ञान में H_2O का अर्थ प्रत्येक स्थान पर एक ही होगा, चाहे वो अमेरिका हो या भारत किन्तु राजनीतिशास्त्र में, प्रजातंत्र संघवाद, स्वतंत्रता एवम अधिकार आदि के भिन्न - भिन्न देशों में विद्वानों द्वारा भिन्न - भिन्न अर्थ लगाये जाते हैं।
- ब्राइस के शब्दों में " भौतिक विज्ञान में एक निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बार - बार प्रयोग किया जा सकता है किन्तु राजनीति में एक प्रयोग बार - बार नहीं दोहराया जा सकता है।

* विज्ञान से सम्बन्धित विषयों के सम्बन्ध में हम निश्चित भविष्यवाणियाँ कर सकते हैं किन्तु राजनीतिविज्ञान में ऐसा संभव नहीं है।
* राजनीति विज्ञान में कार्य और कारण में निश्चित सम्बन्धों का अभाव पाया जाता है, जबकि रसायन एवम भौतिक विज्ञानों में कार्य और कारण के मध्य निश्चित सम्बन्ध पाया जाता है।
* बकल का कथन है कि- " ज्ञान की वर्तमान अवस्था राजनीति को विज्ञान मानना तो बहुत दूर रहा, यह कलाओं में भी सबसे पिछड़ी हुई कला है।"
* " राजनीति का विज्ञान बनना न तो संभव है और न ही वांछनीय।"

Rama Kant pandey
S.R.A.P College
Bara chakiya
B.R.A.B.U (Muzaffarpur)

political Science
B.A Part (I)
paper. I